गोपी पुथरन के साथ मंडला मर्डर्स काम करना शानदार अनुभव : वाणी कपूर

बॉलीवुड अभिनेत्री वाणी कपूर का कहना है कि निर्देशक गोपी पुथरन के साथ वेबसीरीज मंडला मर्डर्स काम करना उनके लिये शानदार अनुभव रहा है.

नेटफ्लिक्स और वाईआरएफ एंटरटेनमेंट की बहुप्रतीक्षित माइथोलॉजिकल-क्राइम थ्रिलर वेब सीरीज मंडला मर्डर्स का प्रीमियर 25 जुलाई को होने जा रहा है. यह सीरीज़ न केवल अपनी अनूठी शैली के लिए चर्चा में है, बल्कि इसलिए भी खास है क्योंकि इसके साथ वाणी कपूर डिजिटल डेब्यू कर रही हैं.यह शो वाणी के लिए इसलिए भी बेहद खास है क्योंकि इसमें वह पहली बार प्रसिद्ध निर्देशक गोपी पुथरन के साथ काम कर रही हैं.

वाणी कपूर ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा,गोपी सर के साथ मंडला मर्डर्स में काम करना एक मास्टर क्लास जैसा है. वह जिस तरह से यथार्थवाद और मनोवैज्ञानिक गहराई को एक साथ पिरोते हैं, वह हर दृश्य को एक बहुपरतीय अनुभव बना देता है. उनके साथ काम करना सिर्फ प्रेरणादायक नहीं बल्कि एक ऐसी यात्रा है जो क्राइम थ्रिलर की परिभाषा ही बदल देती है. वाणी कपूर ने कहा,गोपी सर की सबसे खास बात है उनकी प्रामाणिकता के प्रति प्रतिबद्धता. वह हर कलाकार से यह अपेक्षा करते हैं कि वह अपने किरदार की अदृश्य परतों को तलाशे.

ऋषभ ने पत्नी प्रगति संग कोल्लूर श्री मूकांबिका देवी मंदिर में लिया आशीर्वाद

दक्षिण भारतीय फिल्मों के सुपरस्टार ऋषभ शेट्टी ने पत्नी प्रगति के साथ कोल्लूर श्री मूकांबिका देवी मंदिर में आशीर्वाद लिया है.

कंतारा की जबरदस्त सफलता के बाद ऋषभ शेट्टी ने खुद को भारतीय सिनेमा के बड़े कलाकारों में शामिल कर लिया है. उनके शानदार अभिनय और दमदार निर्देशन दर्शकों और आलोचकों दोनों को खूब पसंद आई है. इसके चलते उन्हें काफी तारीफ, फैन्स का प्यार और इंडस्ट्री में बड़ा सम्मान हासिल किया है.

ऋषभ शेट्टी एक धार्मिक और परिवार से जुड़े इंसान हैं, जो हमेशा इनके लिए समय निकालते हैं. हाल ही में वह कर्नाटक के उडुपी जिले में श्री कोल्लूर मूकांबिका मंदिर में आशीर्वाद लेने पहुंचे.

ऋषभ शेट्टी ने अपने सोशल मीडिया पर श्री कोल्लूर मूकांबिका देवी मंदिर से कुछ तस्वीरें शेयर कीं, जिसमें उनकी पत्नी प्रगति शेट्टी भी साथ दिखीं. दोनों पारंपरिक कपड़ों में बेहद अच्छे लग रहे थे. ऋषभ ने तस्वीरों के साथ दिल से जुड़ा एक प्यारा सा कैप्शन भी लिखा,श्री कोल्लूर मूकांबिका देवी के दरबार में .

ऋषभ शेट्टी अपनी आने वाली फिल्म कंतारा- चैप्टर 1 के जरिए दर्शकों को खास अनुभव देने को तैयार हैं, जो लोककथाओं और आस्था से जुड़ी होगी. इसके अलावा वह जय हनुमान और ऐतिहासिक फिल्म द प्राइड ऑफ भारत- छत्रपति शिवाजी महाराज में भी नजर आएंगे.

इन फिल्मों के जरिए ऋषभ अपनी अलग-अलग भूमिकाओं से भारतीय दर्शकों को दिल से जुड़ी कहानियां दिखाएंगे.

18 जुलाई को रिलीज होगी फिल्म 'रुद्र-शक्ति'

अक्षरा सिंह और विक्रांत सिंह की फिल्म 'रुद्र-शक्ति' 18 जुलाई को रिलीज होगी.

बहुप्रतीक्षित भोजपुरी फिल्म 'रुद्र-शक्ति', जिसमें रोमांस, एक्शन और महादेव की भक्ति का जबरदस्त संगम देखने को मिलेगा. इस फिल्म में पहली बार अक्षरा सिंह और विक्रांत सिंह की दमदार जोड़ी एक साथ नजर आएगी. फिल्म की प्रस्तुति बिभूति एंटरटेनमेंट ने की है, जबकि इसके निर्माता सीबी सिंह हैं.फिल्म 'रुद्र-शक्ति' का निर्देशन निशांत एस. शेखर ने किया है.

अक्षरा सिंह ने फिल्म 'रुद्र-शक्ति' को लेकर कहा कि %शक्ति% का किरदार मेरे दिल के बेहद करीब है, क्योंकि इसमें एक ऐसी महिला की कहानी है जो प्रेम, आस्था और आत्मसम्मान के लिए लड़ती है. इस फिल्म में मुझे अभिनय के साथ-साथ शिव भक्ति को भी जीने का मौका मिला. मैं चाहती हूं कि हर दर्शक इसे अपने परिवार के साथ जाकर देखें, क्योंकि इसमें केवल मनोरंजन ही नहीं, एक सशक्त सामाजिक और आध्यात्मिक संदेश भी है. अक्षरा सिंह ने भोजपुरी सिनेमा को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए इस तरह की फिल्मों को जरूरी बताया और दर्शकों से अपील की कि वे इस पावन माह में इस फिल्म को ज़रूर देखें और आशीर्वाद दें.

विक्रांत सिंह ने फिल्म 'रुद्र-शक्ति' के बारे में बात करते हुए कहा कि 'रुद्र' का किरदार एक शिवभक्त के रूप में जो प्रेम, न्याय और धर्म के लिए लड़ता है .ऐसे पात्र को निभाना गर्व की बात है. फिल्म 'रुद्र-शक्ति' केवल एक प्रेम कहानी नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक सन्देश, एक्शन, रोमांस और महादेव की भक्ति का संगम है, जो आज के युवाओं को प्रेरणा दे सकती है. सावन के इस पावन माह में शिवभक्ति के साथ एक प्रेरणादायक प्रेम कहानी लेकर आ रहे हैं. सभी से अपील है कि 18 जुलाई को सभी दर्शक सिनेमाघरों में जाकर 'रुद्र-शक्ति' जरूर देखें और भोजपुरी सिनेमा को अपना प्यार और समर्थन दें.

श्वेता की फिल्म 'मुझे जान ना कहो मेरी जान' में काम करेंगी तिलोत्तमा शोम

बॉलीवुड अभिनेत्री श्वेता त्रिपाठी की बतौर निर्माता पहली फिल्म 'मुझे जान ना कहो मेरी जान' में उनके साथ तिलोत्तमा शोम काम करती नजर आयेंगी.

श्वेता त्रिपाठी फिल्म 'मुझे जान ना कहो मेरी जान के जरिये निर्माता बन गयी हैं.इस फिल्म में उनकी दोस्त और अभिनेत्री तिलोत्तमा शोम भी अहम किरदार में नज़र आएंगी. इस फिल्म का निर्देशन संजॉय नाग करेंगे और इसकी शूटिंग 2025 के अंत तक शुरू होने की तैयारी में है. यह फिल्म श्वेता के पिछले सफल प्रोजेक्ट 'कॉक' के बाद आ रही है.

श्वेता त्रिपाठी ने कहा,यह फिल्म मेरे दिल के बहुत करीब है, सिर्फ इसलिए नहीं कि यह मेरी पहली फिल्म बतौर निर्माता है, बल्कि इसलिए कि यह जो बात कहती है, वह बहुत जरूरी है. समलैंगिक लव स्टोरीज़ को ईमानदारी, खूबसूरती और गहराई से दिखाया जाना चाहिए. तिलोत्तमा का इस प्रोजेक्ट से जुड़ना इसे और खास बनाता है.

वह सिर्फ एक बेहतरीन कलाकार नहीं, बल्कि वह इंसान हैं जिनकी मैं बहुत इज़्ज़त करती हूं और जिन पर मुझे पूरा भरोसा है. हम दोनों लंबे समय से साथ काम करना चाहते थे, और इससे बेहतर प्रोजेक्ट हमारे साथ काम की शुरुआत के लिए हो ही नहीं सकता.

हॉलीवुड डेब्यू को तैयार विद्युत जामवाल

अपने एक्शन के लिए जाने जाने वाले अभिनेता विद्युत जामवाल अब हॉलीवुड फिल्म में अपनी एंट्री करने जा रहे हैं. लाइव-एक्शन फिल्म 'स्ट्रीट फाइटर' की स्टार कास्ट में शामिल हो गए हैं. यह एक प्रतिष्ठित वीडियो गेम फ्रैंचाइजी पर आधारित फिल्म है. विद्युत इस हॉलीवुड फिल्म 'स्ट्रीट फाइटर' में धालसिम के किरदार में नजर आएंगे. इस फिल्म के जरिए विद्युत हॉलीवुड में अपना डेब्यू करने जा रहे हैं. असल जीवन में मार्शल आर्ट में माहिर विद्युत जामवाल के इस फिल्म में आने से अब उनके फैंस काफी उत्साहित हैं.

धालसिम का उनका किरदार एक चमत्कारी फायर ब्रीथिंग योगी है. जो योग और मार्शल आर्ट्स में माहिर है. इसे पहली बार 1991 में 'स्ट्रीट फाइटर ढ्ढ' में दिखाया गया था. धालसिम केवल अपने परिवार की रक्षा और समर्थन के लिए लड़ता है.'स्ट्रीट फाइटर' का निर्देशन किताओ सकुराई ने किया है, जिन्हें 'बैड ट्रिप' और 'आर्डवार्क' के लिए जाना जाता है. इसमें डेविड डस्टमालचियन भी एक विलेन की भूमिका में हैं, उनके साथ एंड्रयू कोजी, नोआ सेंटीनो, जेसन मोमोआ, रोमन रेंस, ऑरविल पेक और एंड्रयू शुल्ज भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे.

यह वीडियो गेम सीरीज आधिकारिक तौर पर 1987 में शुरू की गई थी और यह एम. बाइसन द्वारा एक वर्ल्ड फाइटिंग टूर्नामेंट के रूप में आयोजित मार्शल आर्ट कलाकारों के ग्रुप्स के बीच आमने-सामने की जबरदस्त लड़ाई के इर्द-गिर्द घूमती थी.

दीया मिर्जा ने प्रियंका चोपड़ा के अभिनय की तारीफ की

बॉलीवुड अभिनेत्री दीया मिर्जा ने फिल्म हेड्स ऑफ स्टेट में प्रियंका चोपड़ा के अभिनय की तारीफ की है.

फिल्म हेड्स ऑफ स्टेट में प्रियंका चोपड़ा के साथ जॉन सीना और इदरीस एल्बा ने मुख्य भूमिका निभाई हैं.

दीया मिर्जा ने इंस्टाग्राम की स्टोरी पर फिल्म %हेड्स ऑफ स्टेट% की एक खास तस्वीर शेयर की. इस तस्वीर में प्रियंका के साथ इरदीस एल्बा और जॉन सीना नजर आ रहे हैं. दीया ने तस्वीर के साथ लिखा, प्रियंका, तुम पर बहुत गर्व है! तुम्हारा अभिनय देखना शानदार अनुभव है. तुमने कमाल कर दिखाया, देसी गर्ल! प्रियंका ने जवाब में दीया का शुक्रिया अदा किया.

कोंकणा सेन शर्मा के हर किरदार में होती है गहराई : रोहन गुरबक्सानी

अभिनेता रोहन गुरबक्सानी का कहना है कि कोंकणा सेन शर्मा के हर किरदार में जो सच्चाई और गहराई होती है, वह कमाल की है.

रोहन गुरबक्सानी इन दिनों अनुराग बसु की नई फिल्म 'मेट्रोज इन दिनों' में अपने अभिनय के लिए दर्शकों, फिल्म इंडस्ट्री और समीक्षकों से मिल रही सराहना का आनंद ले रहे हैं. इस मल्टी-स्टारर फिल्म ने रोहन को कोंकणा सेन शर्मा के साथ काम करने का मौका मिला.

रोहन ने इस अनुभव को याद करते हुए कहा, एक अभिनेता के तौर पर मैं कई सालों से कोंकणा सेन शर्मा को देखता आया हूँ. उनके हर किरदार में जो सच्चाई और गहराई होती है, वो कमाल की है. एक अभिनेता-निर्देशक के तौर पर उनके साथ काम करना बेहद प्रेरणादायक रहा. वो न सिर्फ अपने को-एक्टर से जुड़ना जानती हैं बल्कि उनमें बहुत सादगी और अपनापन भी है.मुझे याद है, उन्होंने मुझसे मेरे बैकग्राउंड और ट्रेनिंग के बारे में पूछा था, और उनके साथ अपना सफर बांटना मेरे लिए बहुत खास था. मेरी सबसे प्यारी यादों में से एक है, उनके साथ गोवा के बीच पर टहलना और ज़िंदगी, कला, और हमारे सफर के बारे में बातें करना वो एक बेहद खूबसूरत पल था. मैंने उन्हें बताया था कि मैंने न्यूयॉर्क के एनवाईयू टिश स्कूल से एक्टिंग की ट्रेनिंग ली है और संयोग से, बचपन में वो भी उसी कॉलेज में पढ़ना चाहती थीं.

कृषि जगत

धान की फसल पर फिजी वायरस का अटैक

धान की फसल में एक बार फिर बौनेपन की समस्या देखी जा रही है. यह समस्या तीन साल पहले पंजाब के खेतों में भी सामने आई थी, जहां धान की सभी प्रकार की प्रजातियों में करीब 5 से 15 प्रतिशत तक फिजी वायरस पाया गया था. इस वायरस के प्रकोप से धान की पैदावार और पूरी फसल को काफी नुकसान हुआ था.

फिजी वायरस क्या है?- फिजी वायरस पौधों में लगने वाला एक प्रकार का वायरस है. यह वायरस पौधों में व्हाइट बैकड प्लांट हॉपर (तेला) नामक कीट द्वारा एक पौधे से दूसरे पौधे में फैलता है. यह कीट संक्रमित पौधों से रस चूसकर स्वस्थ पौधों में वायरस फैलाता है, जिससे धान के पौधे छोटे रह जाते हैं और उनकी पैदावार पर भी काफी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है. किसानों द्वारा इसे सफेद फुदका कीट या चेपा के नाम से भी जाना जाता है.

फिजी वायरस से बचाव कैसे करें? - फिजी वायरस से इस साल धान की फसल को बचाने के लिए, वायरस को फैलाने वाले कीट व्हाइट बैकड प्लांट हॉपर पर समय पर नियंत्रण करना आवश्यक है. इस प्रकोप से धान की फसल को बचाने के लिए इसे मारने वाली दवा का समय पर छिड़काव करना बेहद ज़रूरी है.

अगस्त माह में खेती के लिये कर लें तैयारी

बरसात के मौसम के बीच खेती करने का सबसे बड़ा फायदा सही है कि अलग से सिंचाई साधनों की जरूरत नहीं होती, बल्कि प्राकृतिक पानी गिरने से ही फसलों को बेहतर उत्पादन मिल जाता है. खासकर सब्जियों की बात करें तो इस मौसम में फसलों में अंकुरण और पौधों का विकास तेजी से होता है. खासकर गाजर, शलजम, फूलगोभी, पालक, आदि फसलों की खेती के लिये अगस्त का महीना सबसे अच्छा समय लेकर आता है. इन फसलों की खेती से अच्छा उत्पादन लेने के लिये उन्नत किस्म के बीजों को बोना फायदेमंद रहता है.

गाजर की बुआई- गाजर की खेती के लिये खेत में जैविक विधि अपनायें और 2 से 3 फीट गहरी जुताईयां लगायें. हर जुताई के बाद खेत में पाटा जरूर लगायें, जिससे मिट्टी की संरचना भुरभुरी और खिली-खिली रह सके. समतलीकरण के बाद खेत में कंपोस्ट खाद डालें, जिससे मिट्टी को नमी मिल सके. ध्यान रखें कि उन्नत किस्म के रोगरोधी बीजों से ही गाजर की बुवाई करें और बीज प्रमाणित स्थान से ही खरीदें. गाजर की उन्नत किस्मों में पूसा केसर, घाली, पूरा यमदग्नि, नेन्ट्स आदि शामिल हैं.

शलजम की खेती- अगस्त का महीना शलजम की खेती के लिये सर्वोत्तम रहता है, लेकिन शलजम की खेती से अच्छा उत्पादन लेने के लिये बलुई और रेतीली मिट्टी में ही बुवाई करनी चाहिये. मिट्टी में सख्ती और चिकनापन दूर करने के लिये बुवाई से पहले गहरी 3 से 4 जुताईयां लगायें और पाटा लगाकर पूरे खेत में कंपोस्ट फैलायें.

फूलगोभी की खेती बारिश-के साथ हल्की ठंडक लिये अगस्त का महीना फूलगोभी की बुवाई के लिये बेस्ट रहता है. किसान चाहें तो इसी महीने से फूलगोभी की पौधशाला तैयार कर सकते हैं, जिसके बाद सर्दियों की फूलगोभी की रोपाई सितंबर तक हो जाती है. इसकी खेती से बेहतर क्वालिटी का स्वस्थ उत्पादन लेने के लिये जैविक विधि से खेत की तैयारी और जल निकासी का प्रबंध कर लें.

पालक की खेती-अगस्त में पालक की बुवाई करने पर सर्दियों तक पालक की तीन बार बेहतरीन पैदावार ले सकते हैं. वैसे तो सालभर पालक की मांग बनी रहती है, लेकिन सर्दियों में पालक के पकौड़े से लेकर, सब्जी और जूस का ज्यादा सेवन किया जाता है, इसलिये इसकी खेती में सावधानियां बरतनी चाहिये.

तालाब में नहीं रुकेगी मछलियों की ग्रोथ

नदी-समुद्र को छोड़ दें तो जमीन पर तीन तरह से मछलियों का पालन किया जाता है. ये तीन तरीके हैं तालाब, टैंक और जाल लगाकर. फिशरीज एक्सपर्ट की मानें तो तीनों तरह से मछली पालन में खूब फायदा होता है. लेकिन ये तब मुमकिन है जब मछलियों की खूब ग्रोथ हो. हालांकि तीनों ही तरह से मछली पालन करने पर खूब ग्रोथ होती है, लेकिन जमीन पर होने वाले मछली पालन में सबसे बड़ी परेशानी मछलियों में होने वाली बीमारियां हैं. बीमारी छोटी हो या बड़ी उसका सीधा असर मछलियों की ग्रोथ पर पड़ता है.

लाला धब्बा भी ऐसी ही एक और बीमारी है. मछली पालन में बेशक इन बीमारियों को बहुत मामूली समझा जाता है, लेकिन इसके चलते मछलियों की मौत तक हो जाती है. एक्सपर्ट का ये भी कहना है कि मछली तालाब की हो या फिर टैंक और जाल लगाकर पाली गई मछली पालक मछलियों की कैसी भी छोटी-बड़ी बीमारी को आसानी से पकड़ सकता है.

अगर मछलियों के शरीर से जरूरत से ज्या दा श्ले ष्माम (बलगम) निकल रहा है तो चौंकन्नेप हो जाएं. क्योंकि ज्यादा श्लेाष्मा् निकलने से मछली किसी भी बैक्टीलरिया का शिकार हो सकती है. दूसरा लक्षण है मछली अपने मूल रंग से हटकर बदरंग हो जाती है. मछली के पंखों के नीचे लाल घाव दिखाई दें. मछली के शरीर पर सफेद और काले धब्बें दिखाई देने लगें.

चार लक्षण बताते हैं कि तालाब सामान्य नहीं हैं- आप तालाब के किनारे टहलते हुए भी मछलियों सामान्या लक्षण देखकर उनकी बीमारी को पहचान सकते हैं. चार ऐसे सामान्य लक्षण हैं जिन्हेंक देखते ही पला चल जाता है कि मछली किसी बीमारी का शिकार है. जैसे मछलियों द्वारा सामान्या तरीके से दाना नहीं खाना. मछलियों द्वारा बार-बार तालाब या टैंक के किनारे पर आना. मछलियों द्वारा खरपतवार की आड़ में छिपकर रहना. मछली द्वारा सुस्त तरीके से पानी में रहना मतलब तैरना.

मछली और पानी की मदद से ऐसे करें खेती

इसके तहत एक टैंक में मछली पालन किया जाता है और दूसरी तरफ पानी पर हाइड्रोपोनिक खेती का सिस्टम बनाया जाता है. टैंक में मछलियां फीड खाने के बाद करीब 70 फीसदी तक मल निकालती हैं, जिसमें अमोनिया होता है. अगर यह टैंक में ही पड़ा रहे तो मछलियां के लिए जानलेवा साबित हो सकता है.

मछलियों के टैंक के उस अमोनिया वाले पानी को हाइड्रोपोनिक खेती के लिए इस्तेमाल किया जाता है. जब ये पानी पौधों की जड़ों तक पहुंचता है तो वहां पर जड़ों में मौजूद बैक्टीरिया इसे नाइट्रोजन में तोड़ देते हैं, जो पौधों के विकास के लिए बहुत ही अहम होता है. इसके बाद पानी को फिर से प्यूरिफाई किया जाता है और दोबारा मछलियों के टैंक में डाला जाता है. इस तरह एक ही पानी बार-बार इस्तेमाल होता रहता है और पानी की बचत होती है. कई लोग तो नीचे टैंक में मछली और उसी के ऊपर सब्जियां भी उगाते हैं. हालांकि, उसमें पानी को कुछ-कुछ दिनों पर बदलने की जरूरत होती है.

वैसे तो आप एक्वापोनिक फार्मिंग छोटे स्तर पर भी कर सकते हैं, लेकिन उसमें लागत का अनुपात अधिक रहेगा. अगर आप एक एकड़ जमीन पर एक्वापोनिक फार्मिंग करते हैं तो आपका करीब 2.5 से 3 करोड़ रुपये का खर्चा इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने में लग जाएगा. अगर आपके यहां 24 घंटे बिजली की व्यवस्था है तो आपकी लागत करीब 30 फीसदी तक कम हो जाएगी. 1 एकड़ में एक्वापोनिक खेती के लिए रोजाना करीब 600 यूनिट बिजली की जरूरत होती है. अब बात आती है मुनाफे की. एक्वापोनिक खेती में मुनाफा तभी होगा, जब आप हाई क्वालिटी वाली चीजें लगाएंगे. वहीं एक्वापोनिक खेती से हुई पैदावार पूरी तरह ऑर्गेनिक होती है तो इसके लिए आपको सामान्य की तुलना में दो से तीन गुनी कीमत मिल सकती है.

एक्वापोनिक फार्मिंग के फायदे?

- इस खेती का सबसे बड़ा फायदा ये होता है कि इसमें लगभग 95 फीसदी पानी की बचत होती है.
- एक्वापोनिक खेती में मछलियों के मल से पौधों को न्यूट्रिशन मिलता है. इसमें कोई भी कैमिकल इस्तेमाल नहीं होता .इस तकनीक से उगाई सब्जियां या सलाद पूरी तरह से ऑर्गेनिक यानी रसायन रहित होते हैं.
- जहां पानी की कमी है या जमीन रेतीली, बर्फीली या लवणीय है, वहां पर ये खेत की जा सकती है.
- इसमें जमीन की तरह सिर्फ एक लेयर की खेती नहीं होती है, बल्कि कई स्तरों पर खेती होती है.